भोजपुर समाहरणालय, आरा

(कृषि विभाग)

पत्रांक 1052 / जि०कृ०, आरा, दिनांक 15 वी० अप्रैल 2023

प्रेषक,

जिला पदाधिकारी,
भोजपुर, आरा।

सेवा में

कृषि निदेशक,
बिहार, पटना।

विषयः– आकस्मिक फसल योजना 2023–24 तैयार कर भेजने के संबंध में।

प्रसंगः– भवदीय पत्रांक 89 / 22 (साख्यिकी)–1644 दिनांक 05.04.2023

महाशय,

उपर्युक्त विषयक प्रासंगिक पत्र के संदर्भ में कहना है, कि खरीफ मौसम में कभी अत्यधिक वर्षापात एवं बाढ़ तथा अनावृष्टि / सूखा अथवा वर्षापात के बीच लम्बा अन्तराल होने के कारण फसल क्षति की संभावना / जमीन परती रह जाने की स्थिति बन जाने के फलस्वरूप फसल क्षति न्यूनतम करने हेतु जिले के लिए आकस्मिक फसल योजना 2023–24 तैयार कर इस पत्र के साथ संलग्न कर आवश्यक कार्रवाई हेतु भेजा जा रहा है।

कृपया प्राप्ति स्वीकार की जाय।

अनुलग्नक :– यथोक्त।

विश्वासभाजन,

जिला पदाधिकारी,
भोजपुर, आरा।

DM sir letter 2019/Tiwari Sir/RAJESH

जल शक्ति अभियान–संचय जल, बेहतर कल

कार्यालय, जिला कृषि पदाधिकारी, भोजपुर, आरा।

दूरभाष संख्या – 06182-248220 मोबाईल नम्बर – 9431818732 E-mail ID – dao-bho-bih@nic.in

आकस्मिक फसल योजना वर्ष 2023

भोजपुर जिला एक कृषि प्रधान जिला है तथा यहाँ की भूमि समतल, चौंर, टाल तथा दियारा क्षेत्रों में बँटी हुई है। भोजपुर जिला गंगा एवं सोन नदी से घिरा हुआ है। इस जिले में खरीफ मौसम की खेती मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। इसके अतिरिक्त इस जिला में नहर (मौसमी) राजकीय नलकूप तथा अन्य श्रोतों (चौर, पइन, कूप आदि) से भी सिंचाई होती है, परन्तु यहाँ कभी अधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ की स्थिति, अल्प वृष्टि के कारण सुखाड़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तथा फसलों के असमय ही नष्ट होने की सम्भावना बनी रहती है। इन प्रतिकूल स्थितियों में शष्य प्रणाली में परिवर्तन, उपयुक्त प्रभेदों का चयन एवं फसल पद्धति में परिर्वतन की आवश्यकता होती है। इन विषम परिस्थितियों से निपटने तथा कृषि संबंधित उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु आकस्मिक फसल योजना तैयार की गई है, जो निम्न प्रकार हैः–

क) विलम्ब से मानसून का आगमन (ख) लम्बी अवधि तक सुखाड़ की स्थिति

ग) हथिया नक्षत्र के पूर्व वर्षा का अंत घ) बाढ़ के कारण फसल के विभिन्न चरणों में क्षति।

(क) विलम्ब से मानसून की स्थितिः– बिहार राज्य में जून के द्वितीय सप्ताह से तृतीय सप्ताह तक मॉनसून का आगमन हो जाता है। मानसून के पूर्व रोहण नक्षत्र में वर्षा होती है तो किसान पौधशाला में धान बीज तथा खरीफ मकई, अरहर, उरद, सूर्यमुखी, मूँगफली तथा सब्जी की बोआई करते हैं। रोहण नक्षत्र में वर्षा नहीं होने एवं विलम्ब से मानसून के आगमन की स्थिति में धान के अल्प अवधि वाले प्रभेद तथा धान के अतिरिक्त अन्य फसलों के विकल्प के रूप में लिया जाना चाहिए। फसलों का चयन मिट्टी के प्रकार तथा पानी की उपलब्धता के आधार पर की जानी चाहिए, विलम्ब से मानसून की स्थिति में अग्रलिखित सुझाव प्रस्तावित किये जाते हैं।

क्र.सं.	फसल का नाम	बोआई का समय	अनुशंसित प्रभेद
1	मक्का	अगस्त	सुवान, देवकी, दियारा कम्पोजिट डी.एच.एम. 117, पूसा अगात संकर मक्का–3
2	ज्वार	अगस्त (प्रथम सप्ताह)	स्थानीय प्रभेद, वर्षा, मउ 2101, एस.एच.एम. –1, मउ–2102
3	उरद	अगस्त–सितम्बर	नवीन, शेखर, पंत उडद 35, टी.–9, पंत उडद–30
4	अरहर	अगस्त मध्य–सितम्बर	शरद, पूसा–9, उपास–120
5	अण्डी	मध्य–अगस्त	एम०एच०यू०–18, अरूणा, जी०सी०एच०–5, जी.सी.एच.–4
6	सूर्यमुखी	मध्य–अगस्त	सूर्या, मोरडेन, पैराडेविक, सी.ओ.–1
7	मिश्रीकंद	जुलाई–दिसम्बर	राजेन्द्र, मिश्रीकन्द–1
8	बैगन	अगस्त (रोपाई)	नीलम, अरूण, काशी संदेश, काशी कोमल
9	फूलगोभी	मध्य–अगस्त	पटना अर्ली, हाजीपुर अगात, पूसा कुंआरी, सबौर अग्रिम

कार्यालय, जिला कृषि पदाधिकारी, भोजपुर, आरा।

दूरभाष संख्या – 06182-248220 मोबाईल नम्बर – 9431818732 E-mail ID – dao-bho-bih@nic.in

10	टमाटर	अगस्त–सितम्बर (रोपाई)	पूसा अर्ली, पूसा रूबी, काशी शरद
11	मिरचा	अगस्त (बोआई)	सबौर अर्ली, काशी अनमोल, काशी गौरव, काशी अर्ली
12	मूली	अगस्त	पूसा रश्मि, पूसा चेतकी, पूसा देशी, हिसार मूली नं० 1, पूसा हिमानी
13	प्याज	अगस्त (रोपाई)	पूसा रेड, पटना रेड, नासिक रेड
14	ज्वार (चारा)	अगस्त	स्थानीय प्रभेद, एच.सी.–171, एस.एस.जी.–998
15	मक्का (चारा)	अगस्त	विजय, मोती, जवाहर, स्थानीय, अफ्रीवन टॉल
16	दिनानाथ (घास)	अगस्त	पी०एस०–3 आई०जी०एफ०आर०आई०, बुन्देल–1

रोहण में वर्षा नहीं होने तथा मानसून में विलम्ब की स्थिति में धान के प्रभेदों में परिर्वतन तथा मक्का, अरहर, मडुआ आदि फसलों की शष्य प्रणाली में परिर्वतन की आवश्यकता होती है। धान के कम अवधि वाले प्रभेद जैसे कावेरी, बिरसा धान–201, आई०ई०टी० 834, साकेत–4, तुरन्ता, प्रभात सहभागी, शुष्क सम्राट, सबौर दीप आदि प्रभेदों का चयन कर उनकी बोआई करनी चाहिए। 115 दिनों से कम अवधि के धान प्रभेद उपयुक्त होते हैं।

सिंचित क्षेत्रों में धान के नर्सरी में हल्की सिंचाई करना उपयुक्त होता है। मक्का, अरहर में मल्चिंग तथ निकौनी की आवश्यकता होती है।

लम्बी अवधि तक सुखाड़ की स्थितिः–

- बोआई के तुरंत बाद 10–15 दिनों तक सुखाड़ की स्थिति– में फसल बाढ़ प्रभावित होती है तथा नए पौधा की क्षति होती है। इस स्थिति में पुनः वर्षा होने पर अल्प अवधि वाले धान प्रभेदों (115 दिनों की अवधि के प्रभेद यथा तुरन्ता, प्रभात सहभागी, शुष्क सम्राट, सबौर दीप, कावेरी, राजेन्द्र धान) पर विशेष बल देना उपयुक्त होता है। यदि पौधों में व्यापक क्षति न हुई हो तो यूरिया का छिड़काव एवं टॉप ड्रेसिंग कर पौधो की बढ़वार कराई जा सकती है।
- बोआई के 30–35 दिनों तक सुखाड़ की स्थिति में निकौनी, मल्चिंग तथा पौधों की संख्या कम रखना उपर्युक्त होता है। यदि यह अवधि 3–4 सप्ताह से अधिक हो और पौधों में व्यापक क्षति हो गयी हो तो विलम्ब खरीफ दलहनी फसल तथा कुल्थी, उड़द मूंग, सूर्यमुखी, कुसुम आदि की बोआई करनी चाहिए।
- यदि यह अवधि 15 सितम्बर तक होती है तो ऐसी परिस्थिति है तो ऐसी परिस्थिति में सरसों, तोरिया, सूर्यमुखी, रबी मक्का , अगात आलू, चना, तीसी की बोआई प्रारम्भ कर देनी चाहिए।

कार्यालय, जिला कृषि पदाधिकारी, भोजपुर, आरा।

दूरभाष संख्या – 06182-248220 मोबाईल नम्बर – 9431818732 E-mail ID – dao-bho-bih@nic.in

हथिया नक्षत्र के पूर्व वर्षा की समाप्ति

- संचय किये हुए पानी का उपयोग फसलों के क्रांतिक अवस्था पर ही किया जाय।
- सिंचाई नालों की सफाई करते रहें ताकि सीवेज का नुकसान न हो।
- सिंचाई हेतु पानी की कमी की स्थिति में प्रोटेक्टिव सिंचाई ही की जाय।
- निकौनी लगातार हो ताकि खरपतवारों की वृद्धि नहीं हो तथा तलबीना भी हो सके।
- रबी की जोताई के तुरंत बाद पाटा देना चाहिए। जुताई सुबह में ही हो ताकि नमी को बचाया जा सके।

अतिवृष्टि से बाढ़ का आगमन एवं विभिन्न अवस्थाओं में फसलों की क्षति

- फसल के प्रथम चरण में बाढ़ की स्थिति में अल्पअवधि के धान प्रभेद यथा तुरन्ता, प्रभात सहभागी, शुष्क सम्राट, सबौर दीप, आदिता, सुगंधा, राशि, कावेरी, किरण बिरसा धान, राजेन्द्र भगवती, तुरन्ता, साकेत–4, प्रभात आदि का 90–115 दिनों में तैयार होनेवाले प्रभेद की पुनः बोआई की जा सकती है।

- रोपनी के बाद बाढ़ आने की स्थिति में खेत में खाली जगहों जहाँ की फसल नष्ट हो गई है, दुबारा रोपनी करें। पूरी फसल बर्बाद होने की अवस्था में पुनः धान की रोपनी संभव नहीं हो तो नगदी फसल जैसे तोरिया, कुल्थी, उड़द तथा अगात आलू की बोआई मिट्टी के अनुसार किया जा सकता है।

यह सभी सामान्य अनुशंसाये है। क्षेत्र विशेष एवं मिट्टी की वर्तमान अवस्था के अनुरूप आकस्मिक फसल योजना के अनुरूप कार्यान्वयन होना है। जिला कृषि पदाधिकारी तत्काल निम्न रूप से कार्यवाही प्रारम्भ करेंगे।

- क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्रों के वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के सहयोगियों से अविलम्ब विमर्श कर क्षेत्र विशेष हेतु उपरोक्त वर्णित आकस्मिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में फसल योजना तैयार करेंगे। इस योजना के मुख्य रूवरूप निम्न होंगे।
    - ❖ क्षेत्र के किसानों के लिए आकस्मिकता से निपटने हेतु तकनिकी अनुशंसायें।
    - ❖ सिंचाई नलकूप, लघु सिंचाई, विद्युत आदि विभागों के साथ समन्वय एवं सिंचाई नालों की सफाई नलकूप की मरम्मति, ट्रान्सफार्मर की मरम्मति आदि करा लेना।

कार्यालय, जिला कृषि पदाधिकारी, भोजपुर, आरा।

दूरभाष संख्या – 06182-248220 मोबाईल नम्बर – 9431818732 E-mail ID – dao-bho-bih@nic.in

- अल्प अवधि धन के प्रभेदों के बीज का कम से कम 20 प्रतिशत जुलाई द्वितीय सप्ताह तक आरक्षित करना।
- कृषि प्रक्षेत्रों एवं पंचायतो के माध्यम से नो प्रोफिट नो लॉस पर धान के बिचड़े हेतु कम्युनिटी नर्सरी विकसित करना।
- विलम्ब खरीफ फसल यथा, तोरिया, अगात आलू, उड़द मक्का, सूर्यमुखी के बीज की उपलब्धता हेतु बीज निगम को माँग भेजना एवं स्थानीय बीज विक्रेताओं को भी व्यवस्था हेतु निदेशित करना।

आकस्मिक फसल योजना

क्र.सं.	मौनसून की स्थिति	फसलों की आकस्मिक कार्य योजनानुसार
	सामान्य मौनसून	धान, मक्का, मडुआ एवं अरहर की बोआई
1.	विलम्ब से मौनसून का आगमन	
	(क) दो सप्ताह का विलम्ब	सामान्य फसल चक्र अपनाया जा सकता है, परन्तु कम अवधि के धान प्रभेद (90–115 दिनों की अवधि के प्रभेद यथा तुरन्ता, प्रभात, सहभागी, शुष्क सम्राट, सबौर दीप, आदित्या, फगुनी, कामिनी, वंदना, सुगंधा, राशि, कावेरी, किरण, बिरसा धान, आदि) पर विशेष बल देने की आवश्यकता है। वर्षा आश्रित ऊँची भूमी पर बिरसा धान, ब्राउन गोरा, हीररा, फलंगा आदि की सीधी बोआई भी की जा सकती है।
	(ख) 4 सप्ताह का विलम्ब	अल्प अवधि के धान प्रभेदों यथा, बिरसा धान, हीरा, ब्राउन गोरा, तुरन्ता, प्रभात सहभागी, शुष्क सम्राट, सबौर दीप, आई०ई०टी०–834, कलंग, तुरन्ता, प्रभात आदि की सीधी बुआई करें। मक्का के बदले मडुआ या ज्वार लिया जा सकता है।
	(ग) 6 सप्ताह का विलम्ब	अत्यन्त अल्प अवधि के प्रभेद यथा हीरा जल्दी धान की सीधी बोआई की जा सकती है। मक्का तथा धान की भूमि में मडुआ, उरद, कुल्थी तथा अरहर (बहार) लगायी जा सकती है।
	(घ) 8 सप्ताह का विलम्ब	धान एवं मक्का के बदले कुल्थी, कलाई मसूर, तिल,

कार्यालय, जिला कृषि पदाधिकारी, भोजपुर, आरा।

दूरभाष संख्या – 06182-248220 मोबाईल नम्बर – 9431818732 E-mail ID – dao-bho-bih@nic.in

		आगात आलू आदि की खेती करें।
	(ड़) 10 सप्ताह का विलम्ब	कुल्थी, कलाई, चना, तीसी एवं तोरिया लगावें।
2.	सुधार की स्थिति	
	(क) बोआई के दो सप्ताह बाद	वर्षा होने पर यूरिया का टॉप ड्रेसिंग एवं एन०पी०के० 18:18:18 अथवा 19:19:19 का स्प्रे करे। यदि फसल पूरी तरह सूख गयी है तो अल्प अवधि के धान का ऊपर वर्णित प्रभेद लगावें।
	(ख) बोआई के 4–5 सप्ताह बाद	निकौनी की आवश्यकता होगी ताकि खर–पतवार नष्ट हो एवं मल्चिंग हो सके। यदि सुखाड़ की स्थिति बढ़ती है तो पौधों की संख्या में कमी करें। वर्षा होने पर यूरिया का टॉप ड्रेसिंग करें। वर्षा हो जाने पर खरूहन विधि से खाली स्थानों में रोपनी करें। यदि फसल पुरी तरह प्रभावित हो तो धान के बदले केलाई, कुल्थी, सूर्यमुखी लगायें।
3.	हथिया के पूर्व वर्षा की समाप्ति	निकौनी आवश्यक है। संचित जल से सिचाई करें। सिचाई में पूरी सावधानी बरते ताकि जल बर्बाद न हो। यदि सूखे की स्थिति से धान की फसल बर्बाद हो चुकी है तो आगात रबी जैसे तोरिया, आगात आलू, चना, तीसी, रबी मक्का लगायें।
4.	अतिवृष्टि या बाढ़ की स्थिति	
	(क) धान की प्रारम्भिक अवस्था में	
	(I) अगस्त प्रथम पक्ष	उपलब्ध बिचड़ों से पुनः रोपनी, खुरूहन विधि से खाली स्थानों पर रोपनी करें तथा अल्प अवधि के धान प्रभेद, तुरन्ता, प्रभात सहभागी, शुष्क सम्राट, सबौर दीप , बीज दर 75 किलो ग्राम/हे० रखें।

कार्यालय, जिला कृषि पदाधिकारी, भोजपुर, आरा।

दूरभाष संख्या – 06182-248220 मोबाईल नम्बर – 9431818732 E-mail ID – dao-bho-bih@nic.in

		ऊँची जमीन पर बचे हुए धान की प्रकाश संवेदी किस्मों को उखाड़ कर नीची जमीन में लगाना। 3–4 धान पौधे एक साथ 10X10 C.M की दूरी पर लगायें। अंडी की अरूण एवं ज्योति प्रभेद की बुआई करे। उरद टी०–9, पंत उरद–30, नवीन किस्मों को लगावें। चारा हेतु मक्का किस्म अफ्रिकन टॉल, बिजय ज्वार, एम०पी० चरी, पी०सी०–23, हरा सोना–नेपियर, पूसा जायन्ट, उरद देशी किस्म।
	(II) अगस्त द्वितीय पक्ष	अगस्त प्रथम पक्ष में वर्णित सुझाव को चालू रखें। सितम्बर अरहर की बोआई–बहार, शरद, पूसा–9, मिश्रीकन्द एवं शकरकन्द लगावें। शकरकन्द प्रभेद–क्रौस–4, राजेन्द्र, शकरकन्द–5, तथा सब्जी की खेती करें।
	(ख) फसल की विलम्ब अवस्था में	
	(I) सितम्बर प्रथम पक्ष	सितम्बर में अरहर जैसे बहार, शरद, पूसा–9 की बोआई करें। सब्जी, जैसे–परवल किस्म राजेन्द्र, परवल–1, राजेन्द्र परवल–2 स्वर्णरेखा एवं स्थानीय किस्में। बैंगन, फूलगोभी अन्य सब्जी की खेती करें। गाजर, भिण्डी, बोरो, पालक, साग आदि की बोआई करें।
	(II) सितम्बर द्वितीय पक्ष	तेरिया किस्म–पंचाली, भवानी, आर०ए०यू०टी०–17, पी०टी०–303 की बोआई करें। मक्का की बुआई करें। सूर्यमुखी के सूर्या, सनराईज, मोरडेन किस्मों को लगायें। कुल्थी की बोआई कर सकते है। आलू की कुफरी अशोका, कुफरी ख्याती, टी०पी०एस०, कुफरी चन्द्रमुखी, राजेन्द्र आलू–3 को लगावें। धान की खड़ी फसलों का उपरिवेशन 20 किलो नेत्रजन, प्रति हेक्टर की दर से करें। समयानुसार कीट व्याधि का नियंत्रण करें।

13.04.2023

वरीय बैज्ञानिक एण्ड हेड़,
कृषि विज्ञान केन्द्र, आरा।

13.04.23

जिला कृषि पदाधिकारी,
भोजपुर, आरा।

जिला पदाधिकारी,
भोजपुर, आरा।

कार्यालय, जिला कृषि पदाधिकारी, भोजपुर, आरा।

दूरभाष संख्या – 06182-248220 मोबाईल नम्बर – 9431818732 E-mail ID – dao-bho-bih@nic.in

चारा फसलो के लिए आकस्मिक फसल योजना वर्ष–2023

कृषि एवं पशुपालन एक दूसरे के पूरक है। दोनों मिलकर राज्य की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। हमारे राज्य में कुल कृषि योग्य भूमि के 0.21 प्रतिशत भू–भाग पर हरे चारे की खेती होती है। बिहार राज्य में पशुओं की संख्या 271.62 लाख के लगभग है और जिसमें प्रतिवर्ष बढ़ोतरी हो रही है। राज्य में प्रति पशु प्रतिदिन लगभग 3.5 किग्रा० हरा चारा ही उपलबध है जबकि प्रतिदिन प्रति पशु 10 किलो ग्राम हरे चारे की आवश्यकता होती है। अतः चारे की इस कमी को पूरा करने के लिए कृषि की भूमि मे से हरा चारा पैदा करने हेतु अतिरिक्त भूमि निकालना असंभव है क्योंकि राज्य में बढ़ती हुई आबादी के लिए खाद्यानों, दालों एवं सब्जियों आदि को अधिक पैदा करने की प्रतिस्पर्धा है। अतः गुणवत्तायुक्त पर्याप्त मात्रा में हरा चारा उत्पादन करने के लिए उपयुक्त प्रभेदों को चयन करके वैज्ञानिक विधियों के द्वारा चारा फसलों एवं घासों की खेती करनी चाहिए।

फसल	बुआई /रोपनी का समय	किस्म /प्रभेद	बीज दर (किग्रा०प्रति हे०)	बुआई रोपनी की दूरी (से०मी०	कटनी की विधि एवं संख्या	उर्वरक की मात्रा (ना०फा०पो०)	सिचाई	उपज क्षमता (क्वीं० /हे ०
ज्वार	जून–जुलाई	PC-6, PC-9, PC-23, एम. पी. चरी. एच. सी. 171, 260 एस.एस.जी. 998,898,555 (बहु कटाई)	40	25	फूल लगाते समय एवं बहु कआई वाली प्रजातियों में पहली कटनी 50 दिनों पर	60:30:30	वर्षा न होने पर 3–4 सिचाई। बहु कटाई वाली प्रजातियों में 4–5 सिचाई	400 बहु कटाई वाली प्रजातियों में 3–4 कटाई में 500–600
मक्का	जून –जुलाई	अफ्रीकन टाल, विजय, मोती, जवाहर	60	30	भूट्टे लगाने से पहले	100:50:25	वर्षा न होने पर 3–4 सिचाई	450
लेबिया	जून –जुलाई	यूपीसी 4200, 5286, 287	40	30	फूल लगते समय	20:40:20	वर्षा न होने पर 1–2 सिचाई	350
बाजरा	जून–जुलाई	एल–72, 74 जाइन्ट बाजरा, ए० बी०के०बी० 19	10	25	फूल लगते समय	60:40:30	वर्षा न होने पर 1–2 सिचाई	300

13.04.2023

वरीय बैज्ञानिक एण्ड हेड़,
कृषि विज्ञान केन्द्र, आरा।

13/4/23

जिला कृषि पदाधिकारी,
भोजपुर, आरा।

जिला पदाधिकारी,
भोजपुर, आरा।